सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की व्यावसायिक संरचना का स्थानिक प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. अरूणा कुजूर

पूर्व सहा. प्रा. (भूगोल), होली क्रॉस वीमेंस कॉलेज अंबिकापुर (छ.ग.)

शोध सारांश

व्यावसायिक संरचना किसी क्षेत्र की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण सूचक है। सरगुजा जिला जनजातीय बहुल क्षेत्र है, जहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि एवं वनों पर निर्भर है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की व्यावसायिक संरचना, उसके स्थानिक प्रतिरूप तथा उससे संबंधित सामाजिक–आर्थिक कारकों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में प्राथमिक आँकड़ों का उपयोग किया गया है तथा व्यवसायों को कृषक, कृषि– मजदूर, मजदूर, सरकारी नौकरी एवं अन्य वर्गों में विभाजित किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनजातीय जनसंख्या का अधिकांश भाग प्राथमिक गतिविधियों पर निर्भर है, जबकि द्वितीयक एवं तृतीयक गतिविधियों में सहभागिता अपेक्षाकृत कम है। अतः अधिकांश जनजातीय परिवार कृषि एवं कृषि–मजदूरी पर निर्भर हैं, जबकि सरकारी सेवा, व्यवसाय तथा अन्य गैर–कृषि गतिविधियों में उनकी भागीदारी सीमित है। शिक्षा, भू– स्वामित्व, आय स्तर, परिवार का आकार तथा बाजार एवं परिवहन सुविधाओं की उपलब्धता व्यावसायिक संरचना को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा एवं शासकीय योजनाओं के प्रभाव से जनजातीय समुदायों में व्यावसायिक विविधीकरण की प्रवृत्ति विकसित हो रही है।

शब्द कुंजी : व्यावसायिक संरचना, स्थानिक प्रतिरूप, प्राथमिक गतिविधियां, आर्थिक प्रगति, व्यावसायिक विविधीकरण।

प्रस्तावना–

जनजातीय समुदायों की आजीविका परंपरागत रूप से कृषि, वनोपज संग्रहण तथा पशुपालन पर आधारित रही है। वैश्वीकरण, शिक्षा, संचार एवं विकास कार्यक्रमों के प्रभाव से इनके व्यावसायिक स्वरूप में परिवर्तन देखा जा रहा है। सरगुजा जिला छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख जनजातीय क्षेत्र है, जहाँ उरांव, गोंड, कोरवा, पंडो, कंवर, नगेसिया, बैगा आदि जनजातियाँ निवास करती हैं। जिले में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या कुल जनसंख्या का लगभग 55 प्रतिशत से अधिक है। वर्तमान समय में शिक्षा, नगरीकरण, संचार साधनों के विस्तार तथा सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के प्रभाव से जनजातीय समुदायों की व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। सरगुजा जिला जनजातीय बहुल क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। अतः जनजातीय व्यावसायिक संरचना का अध्ययन क्षेत्रीय विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

अध्ययन क्षेत्र–

अध्ययन क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित अविभाजित सरगुजा जिला पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। है। जिसका विस्तार 23° 04′ 25″ उत्तरी अक्षांश से 24° 06′ 17″ उत्तरी अक्षांश तथा 81° 32′ 40″ पूर्वी देशांतर से 84° 04′ 40″ पूर्वी देशांतर के मध्य है। जिले की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है तथा अधिकांश कृषि वर्षा पर निर्भर करती है। सरगुजा जिला पठारी एवं वनाच्छादित क्षेत्र है तथा इसकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि एवं वनों पर आधारित है। जिले की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। इसका कुल क्षेत्रफल 15,771.75 वर्ग किलोमीटर है जन जिसके 8645.7 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर वनों का विस्तार है। यह अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है। यहाँ कई प्रकार के जनजातीय समुदाय दुर्गम पहाड़ी इलाकों में प्रकृति के सान्निध्य में अपना जीवन यापन कर रहे हैं। यहाँ गोड़, उराँव, कमार, कोरवा, पहाड़ी कोरवा, पंडो, कोड़ाकू, नगेशिया, बिरहोर, माँझी, मझवार, खैरवार, खिरवार, चेरवा, अगरिया आदि जनजातियाँ निवास करती हैं। इस जिले में गोंड जनजाति की जनसंख्या सर्वाधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार सरगुजा जिले की कुल जनसंख्या 2,359,886 है जिसमें पुरुष 1,193,129 एवं महिलाएं 1,66,757 हैं जिले में जनसंख्या घनत्व 150 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों का 55.11 प्रतिशत है। जिले की 89.71 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में एवं 10.29 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है। जिले में औसत साक्षरता 60 प्रतिशत है पुरुषों में औसत साक्षरता 69.53 प्रतिशत एवं स्त्रियों में 50.32 प्रतिशत है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की व्यावसायिक संरचना का विश्लेषण करना।
2. चयनित ग्रामों में विभिन्न व्यवसायों के स्थानिक प्रतिरूप का अध्ययन करना।
3. व्यावसायिक संरचना को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं आर्थिक कारकों की अध्ययन करना।

आंकड़ों के स्त्रोत –

प्रस्तुत अध्ययन सरगुजा जिले के चयनित जनजातीय ग्रामों की व्यावसायिक संरचना के भौगोलिक विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन क्षेत्रीय सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया, जिसके अंतर्गत चयनित जनजातीय ग्रामों में परिवारों से संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त की गई। द्वितीयक आंकड़े भारत की जनगणना रिपोर्ट 2011 एवं जिला सांख्यिकीय पुस्तिका सरगुजा 2011 से प्राप्त किए गए। सरगुजा जिला 19 विकासखण्डों में विभक्त है। अतः अध्ययन संबंधी प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिये सर्वप्रथम प्रत्येक विकासखण्ड से एक–एक गाँव सोद्देश्य निर्देशन विधि द्वारा चयनित किया गया चूंकि अध्ययन अनुसूचित जनजातियों पर आधारित है अतः ऐसे ग्रामों को लिया गया जिसमें अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 60 प्रतिशत से अधिक है। तत्पश्चात् जिला जनसांख्यिकीय प्रोफाइल जनगणना वर्ष 2011 के आधार पर प्रत्येक गांव की जनसंख्या से 20 प्रतिशत जनसंख्या को अध्ययन के लिये चुना गया। इस प्रकार 887 परिवार चयनित हुये जिनका अध्ययन करने के लिये साक्षात्कार अनुसूची प्रयुक्त की गई।

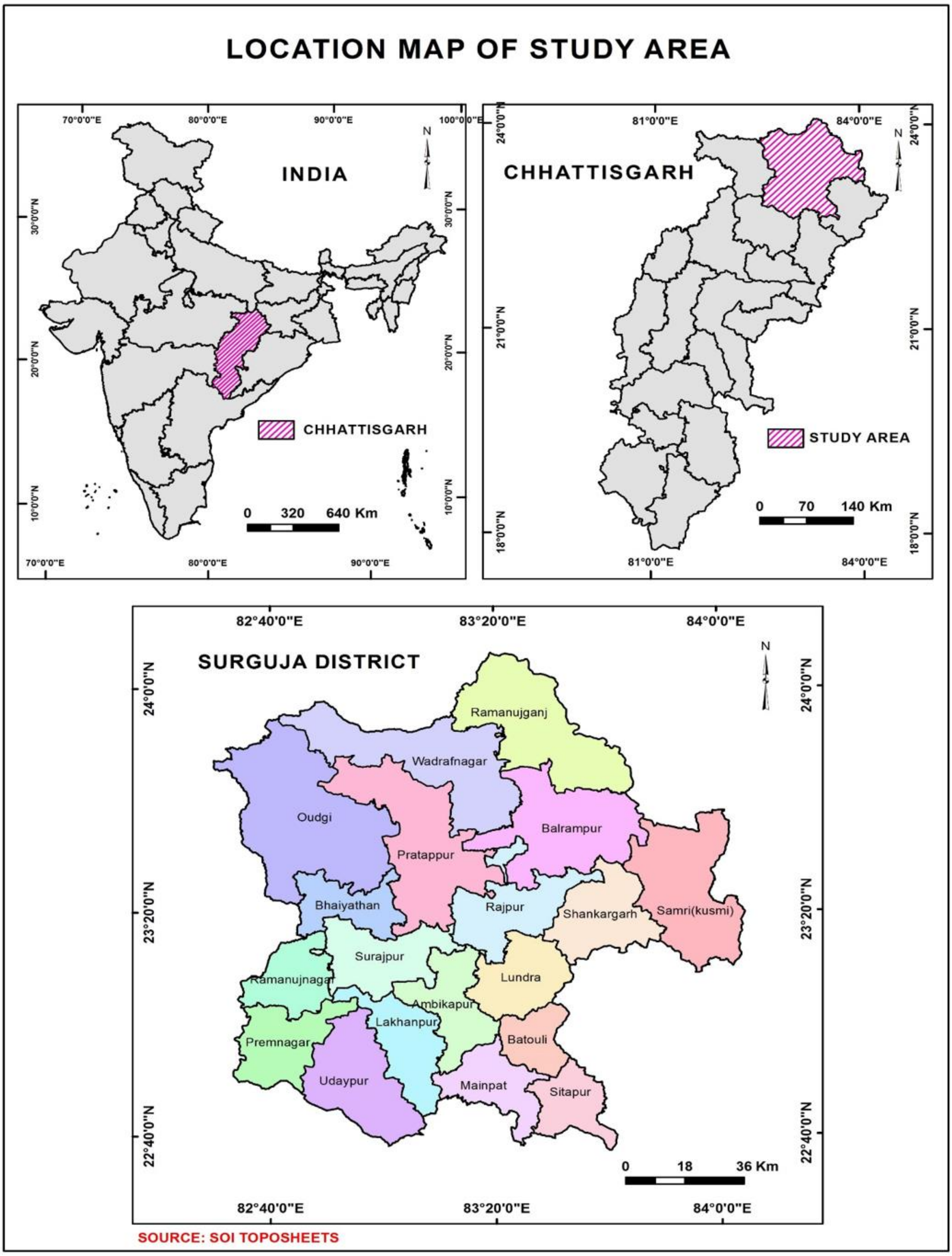
LOCATION MAP OF STUDY AREA
INDIA
CHHATTISGARH
0 320 640 Km
CHHATTISGARH
STUDY AREA
0 70 140 Km
SURGUJA DISTRICT
Ramanujganj
Wadrafnagar
Oudgi
Balrampur
Pratappur
Samri(kusmi)
Bhaiyathan
Rajpur
Shankargarh
Surajpur
Ramanujnagar
Lundra
Ambikapur
Lakhanpur
Premnagar
Batouli
Udaypur
Mainpat
Sitapur
0 18 36 Km
SOURCE: SOI TOPOSHEETS

Map no. 1.1

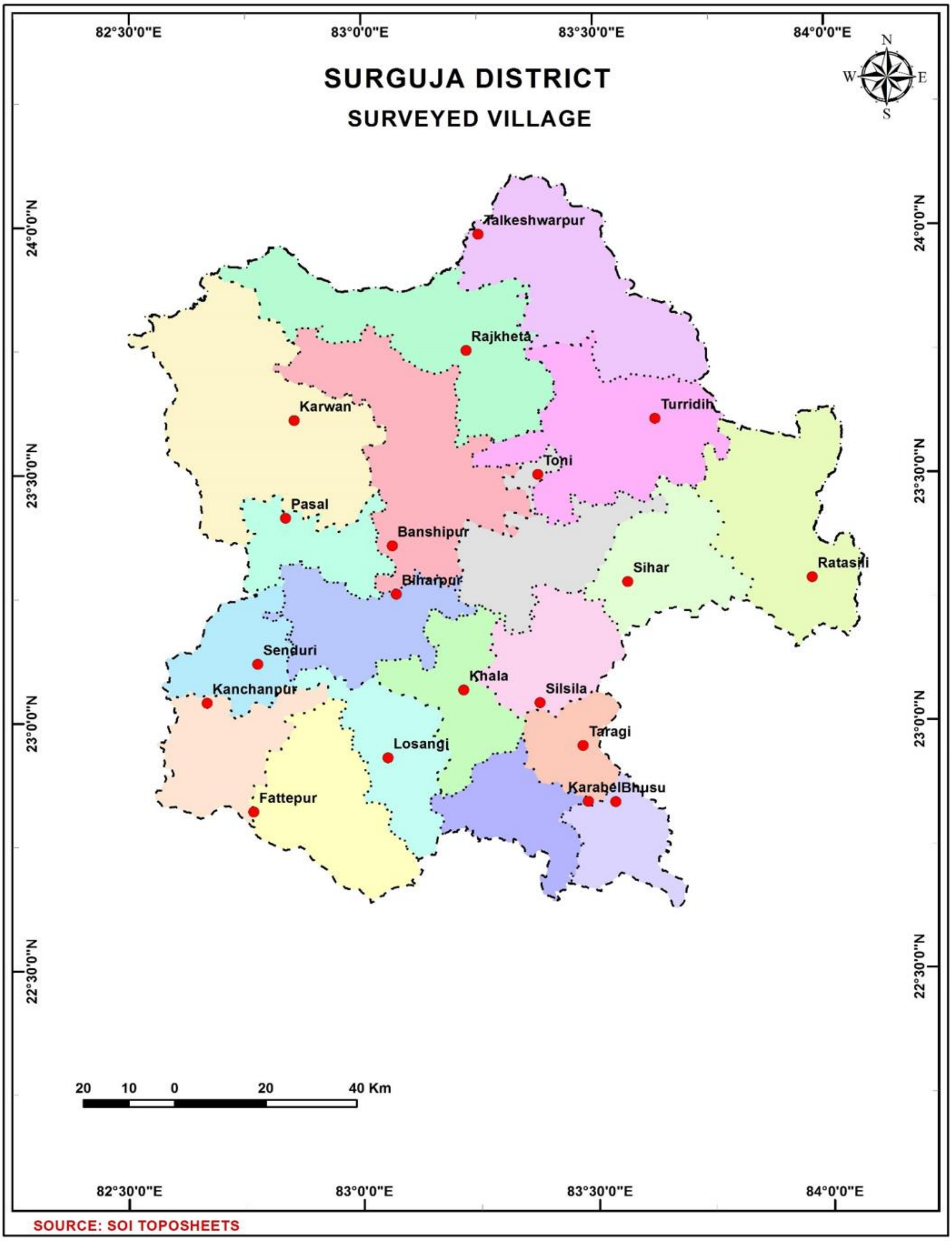

Map. No. 1.2

विधितंत्र–

चयनित ग्रामों में सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की व्यावसायिक संरचना का अध्ययन एवं स्थानिक प्रतिरूपों का ग्रामवार विश्लेषण किया गया। चयनित जनजातीय ग्रामों के परिवारों का अध्ययन परिवार प्रमुख के व्यवसाय, शिक्षा, भूमि स्वामित्व, आय स्तर एवं रोजगार के प्रकार

को प्रमुख संकेतक मान कर अध्ययन किया गया। व्यावसायिक संरचना के वितरण को प्रतिशत में दर्शाया गया तथा चयनित ग्रामों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। परिणामों को स्पष्ट एवं प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने के लिए सारणियों तथा दण्ड आरेखों का उपयोग किया गया।

चयनित जनजातीय ग्रामों की व्यावसायिक संरचना को निम्न वर्गों में विभाजित किया गया है–

जनजातियों की अर्थव्यवस्था उन्नत समाज से अलग होती है। इनकी निजी आवश्यकतायें बहुत ही सीमित होती है। इन सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये ये पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर होते हैं। ये मुख्यतः प्रकृति प्रेमी होते हैं और अपनी आजीविका के लिये वनों पर आश्रित होते हैं। लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो हमारी आधुनिक अर्थव्यवस्था ने इनके वन अधिकारों को सीमित कर दिया है। निरंतर कटते वनों एवं उन पर लगने वाले कड़े प्रतिबंधों ने इनकी अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। अधिकांश जनजातियों के पास अपनी पुश्तैनी जमीन होती है लेकिन ये इनके जीवनयापन के लिये पर्याप्त नहीं होती है। इसलिये ये कृषि के साथ–साथ, मजदूरी, पशुपालन, वनोपज व जड़ी–बूटी का संग्रहण कर उन्हें बेचकर आय अर्जित करते हैं और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। व्यवसायिक संरचना का विवरण तालिका क्र. 1.1 एवं 1.2 में दिया गया है।

(1) कृषि एवं कृषि–मजदूरी –

सरगुजा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि है। पर्याप्त कृषि भूमि न होने के कारण लोग मजदूरी व अन्य कार्यों में भी संलग्न है। आधुनिकता का प्रभाव इन ग्रामों में स्पष्ट देखने को मिलता है। कृषि में नवाचारों का प्रयोग व रोजगार के नये अवसरों ने इनको नयी दिशा प्रदान की है। इसी आधार पर जनजातियों की व्यवसायिक संरचना का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि ग्रामों में आज भी आजीविका का प्रमुख आधार कृषि है। सर्वेक्षित 887 परिवारों में 51.39 प्रतिशत परिवारों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यहाँ पर सर्वाधिक कृषक परिवार ग्राम फत्तेहपुर में 59.48 प्रतिशत तथा सबसे कम ग्राम पासल में 37.5 प्रतिशत है। जनजातीय आधार पर सर्वाधिक कृषक कंवर में 58.57 प्रतिशत एवं सबसे कम पण्डो में 34.35 प्रतिशत है। सर्वेक्षित परिवारों मे 16.24 प्रतिशत परिवार कृषि मजदूरी करते हैं। यहाँ पर सर्वाधिक कृषि मज़दूर परिवार ग्राम तोनी में 27.26 प्रतिशत तथा सबसे कम करवाँ में 9.73 प्रतिशत हैं। जनजातीय आधार पर सर्वाधिक कृषि मजदूर पहाड़ी कोरवा में 34.22 प्रतिशत एवं सबसे कम उराँव में 8.23 प्रतिशत है।

(2) मजदूरी –

इस वर्ग में वे लोग आते हैं जिनके पास 1 हेक्टेयर से कम भूमि है। ये लोग दूसरों के खेत या अन्य निर्माण कार्य में मजदूरी करते एवं अपनी जीविका चलाते हैं। सर्वेक्षित परिवारों में 13.32 प्रतिशत परिवार मजदूरी में संलग्न हैं। यहाँ पर सर्वाधिक मजदूर परिवार ग्राम बंशीपुर में 19.32 प्रतिशत तथा सबसे कम ग्राम तुर्रीडीह में 9.12 प्रतिशत है। जनजातीय आधार पर सर्वाधिक मजदूर पण्डो में 28.46 प्रतिशत एवं सबसे कम उराँव में 7.31 प्रतिशत है।

तालिका क्र. 1.1
सरगुजा जिला : व्यवसायिक संरचना

(प्रतिशत में)

क्र.	सर्वेक्षित ग्राम	सर्वेक्षित परिवारों की संख्या	कृषक	कृषि मजदूरी	मजदूरी	सरकारी नौकरी	अन्य
1	खाला	52	52.11	13.41	11.63	6.31	16.54
2	तुर्रीडीह	26	47.33	21.36	9.12	13.36	8.83
3	तरागी	39	44.28	22.92	13.24	9.35	10.21
4	पासल	13	37.51	24.52	17.68	7.95	12.34
5	रतासिली	27	43.86	21.66	13.74	11.47	9.27
6	लोसँगी	49	46.73	23.12	15.43	3.41	11.31
7	सिलसिला	96	49.97	23.83	12.21	2.63	11.36
8	काराबेल	51	46.43	16.03	11.98	14.92	10.64
9	करवाँ	17	51.69	9.73	16.14	9.63	12.81
10	बंशीपुर	61	52.83	9.84	19.32	7.54	10.47
11	कंचनपुर	38	55.79	13.52	12.53	6.74	11.42
12	तोनी	36	43.75	26.57	18.53	2.86	8.29
13	सेन्दुरी	94	57.78	11.29	12.36	4.31	14.26
14	तालकेश्वरपुर	53	58.52	12.21	10.16	3.76	15.35
15	सिहार	32	52.36	16.29	11.51	8.52	11.32
16	भूसू	63	47.74	21.78	14.33	3.87	12.28
17	बिहारपुर	47	57.26	11.23	13.56	7.52	10.43
18	फत्तेहपुर	16	59.48	12.21	11.57	8.23	8.51
19	रजखेता	77	54.32	14.52	15.12	2.87	13.17
	औसत	**887**	**51.39**	**16.14**	**13.32**	**8.14**	**11.01**

स्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2016

(3) सरकारी नौकरी –

जो शिक्षित हैं वे योग्यतानुसार सरकारी संस्थानों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। वे सेना, पुलिस, सचिव, रोजगार सचिव, शिक्षक, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, वन विभाग, नर्स, वेटनरी डॉक्टर, इंजीनियर, सब इंस्पेक्टर, SECL में कर्मचारी, बैंक, चपरासी आदि में पदस्थ है।

सर्वेक्षित परिवारों में सरकारी नौकरी में कार्यरत व्यक्तियों का औसत 8.14 प्रतिशत है। सरकारी नौकरी में संलग्न सर्वाधिक व्यक्ति ग्राम काराबेल में 14.92 प्रतिशत एवं सबसे कम ग्राम तोनी में 2.16 प्रतिशत है। जनजातीय आधार पर सर्वाधिक सरकारी नौकरी में संलग्न व्यक्ति गोंड में 18. 51 प्रतिशत एवं सबसे कम बैगा में 3.38 प्रतिशत हैं।

अतः स्पष्ट है कि शिक्षा का प्रसार धीरे–धीरे इन जनजातियों को अपने निवास स्थान से निकल कर भौतिक संसार में कदम रखने का मार्ग प्रशस्त कर रही है। अब गांव पहले जैसे नहीं रहे। अब यहाँ आधुनिकता की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है।

तालिका क्र. 1.2
सरगुजा जिला : जातिवार व्यवसायिक संरचना

(प्रतिशत में)

क्र.	जनजाति	कृषक	कृषि मजदूरी	मजदूरी	सरकारी नौकरी	अन्य
1	अगरिया	51.18	13.57	12.23	4.51	18.51
2	बैगा	42.23	22.96	14.17	3.38	17.26
3	चेरवा	43.19	21.76	13.22	6.46	15.37
4	गोंड	52.71	9.32	8.02	18.51	11.44
5	कंवर	58.57	9.98	7.38	14.93	9.14
6	खैरवार	46.28	21.44	14.21	5.81	12.26
7	खिरवार	54.34	19.13	12.22	3.93	10.38
8	कोड़ाकू	41.36	18.05	28.24	3.89	8.46
9	कोरवा	42.41	18.12	27.33	4.83	7.31
10	नगेशिया	57.21	9.57	12.24	8.67	12.31
11	पहाड़ी कोरवा	36.19	34.22	23.12	4.34	2.13
12	पण्डो	34.35	26.04	28.46	7.58	3.57
13	उराँव	56.14	8.23	7.31	17.69	10.63
	औसत	**51.39**	**16.14**	**13.32**	**8.14**	**11.01**

स्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2016

आरेख क्र. 1.1
सरगुजा जिला : व्यवसायिक संरचना

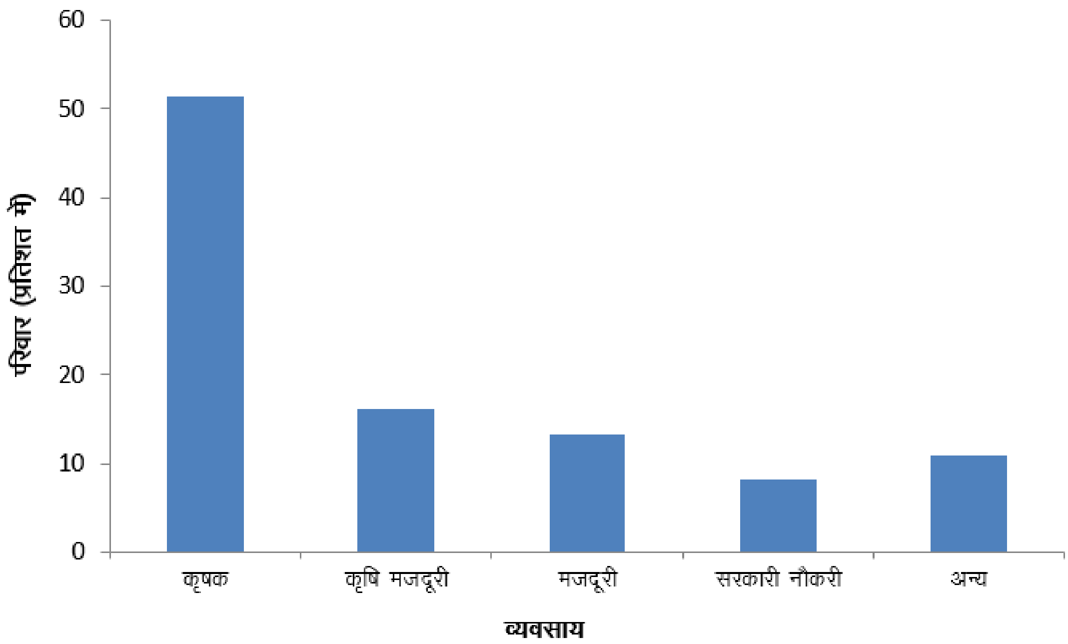

आरेख क्र. 1.2
सरगुजा जिला : जातिवार व्यवसायिक संरचना

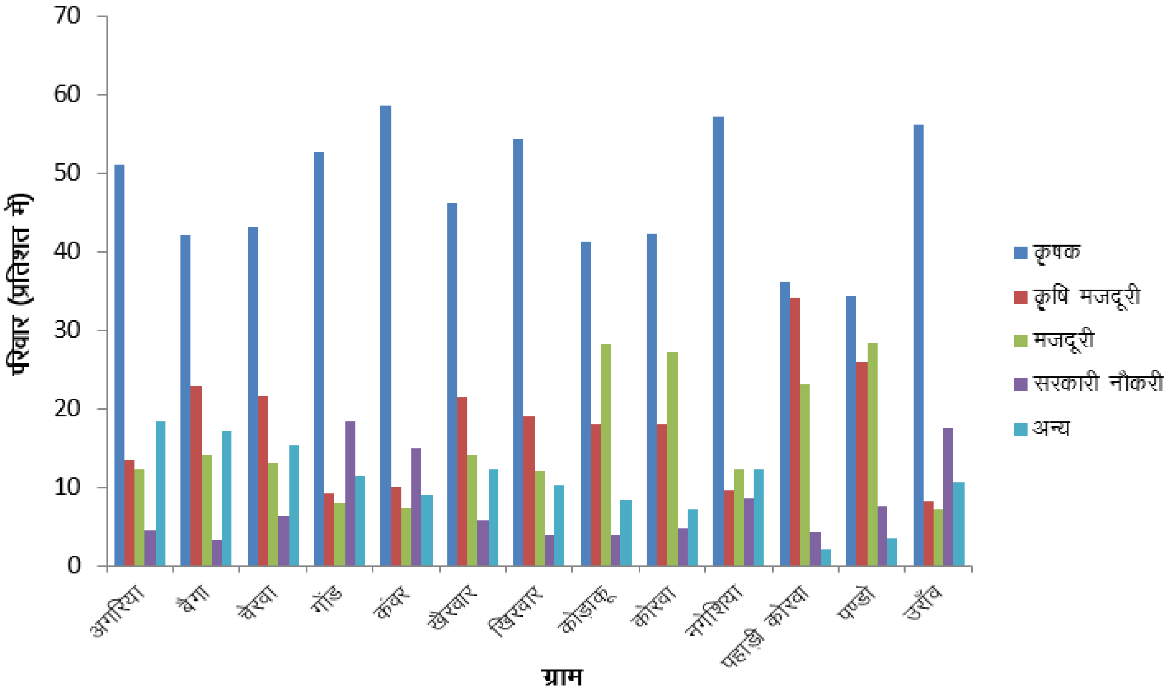

(4) अन्य व्यवसाय –

जनसंख्या का कुछ भाग अन्य व्यवसाय में संलग्न हैं। जैसे – पशुपाल, पोल्ट्री फार्म, पेट्रोल पम्प, साईकिल दुकान, किराना दुकान, गन्ना जूस स्टॉल, गुड़ विक्रय, हरी सब्जी विक्रय आदि। जिससे इनको जीविका चलाने में मदद मिल जाती है।

सर्वेक्षित ग्रामों में 11.01 प्रतिशत जनसंख्या अन्य व्यवसाय में संलग्न है। यहाँ पर अन्य व्यवसाय में संलग्न सर्वाधिक जनसंख्या ग्राम खाला में 16.4 प्रतिशत एवं सबसे कम ग्राम तुर्रीडीह में 8.23 प्रतिशत है। जनजातीय आधार पर सर्वाधिक अन्य व्यवसाय अगरिया में 18.53 प्रतिशत एवं सबसे कम ग्राम पहाड़ी कोरवा में 2.13 प्रतिशत है। इस प्रकार स्पष्ट है कि चयनित ग्रामों में लोग अपने जीविकोपार्जन के लिये विभिन्न प्रकार के कार्यों में संलग्न है।

सरगुजा के 58 प्रतिशत भू–भाग पर वनों का विस्तार है। जो जनजातियों के प्रमुख निवास स्थान है। अतः अनुसूचित जनजातियों की आजीविका में लघु वनोपज संग्रहण का महत्वपूर्ण स्थान है। वनों से आच्छादित होने के कारण ये लोग विभिन्न वनोपज, जैसे– फल, कंदमूल, विभिन्न प्रकार के वनौषधियों का उपयोग करने के अलावा उनको एकत्रित कर नजदीकी व्यापारी अथवा साप्ताहिक बाजार व मुख्य सड़कों के किनारे बेचते हैं। वे अपनी विक्रय की जाने वाली वस्तुओं से न तो उत्पादन लागत वसूल कर पाते और न ही लाभ उठा पाते हैं। वे तो बस अपनी सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये इस कार्य में लगे हुये हैं। सर्वेक्षित अधिकांश ग्राम वनों से लगे हुए होने के कारण वनोपज संग्रहण को प्रोत्साहित करते हैं।

चयनित ग्रामों में जनजातियों की व्यावसायिक संरचना : परिणाम एवं विश्लेषण–

सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार अधिकांश जनजातीय परिवारों का मुख्य व्यवसाय कृषि पाया गया। सीमांत एवं भूमिहीन परिवारों में कृषि–मजदूरी प्रमुख आजीविका स्रोत है। कुछ परिवार निर्माण कार्य, निजी रोजगार एवं छोटे व्यापार से जुड़े हुए हैं। सरकारी सेवा में कार्यरत व्यक्तियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम पाया गया, किन्तु शिक्षित युवाओं में इस क्षेत्र की ओर रुचि बढ़ रही

है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि जिन परिवारों की शैक्षणिक स्थिति बेहतर है, उनमें गैर–कृषि व्यवसायों की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक है। भू– स्वामित्व एवं आय स्तर का भी व्यवसाय चयन पर महत्वपूर्ण प्रभाव देखा गया। सड़क एवं बाजार से जुड़े गाँवों में व्यावसायिक विविधता अधिक पाई गई, जबकि दूरस्थ एवं वन क्षेत्रों में पारंपरिक व्यवसायों का प्रभुत्व बना हुआ है। जनजातीय समुदायों की व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी किन्तु स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कृषि अभी भी प्रमुख आजीविका का आधार है, किन्तु शिक्षा एवं रोजगार के नए अवसरों के कारण युवाओं का झुकाव सेवा एवं गैर–कृषि क्षेत्रों की ओर बढ़ रहा है। आर्थिक संसाधनों की कमी, तकनीकी कौशल का अभाव तथा बाजार तक सीमित पहुँच व्यावसायिक विविधीकरण में प्रमुख बाधाएँ हैं।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की व्यावसायिक संरचना अभी भी कृषि प्रधान है। कृषि एवं कृषि–मजदूरी प्रमुख रोजगार स्रोत हैं, जबकि सेवा, व्यवसाय एवं अन्य गैर–कृषि गतिविधियों में सहभागिता सीमित है। यद्यपि शिक्षा, नगरीकरण, संचार एवं सरकारी विकास कार्यक्रमों के प्रभाव से कुछ क्षेत्रों में व्यावसायिक विविधीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है, फिर भी द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में जनजातीय सहभागिता अपेक्षाकृत सीमित है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक संरचना में स्थानिक असमानताएँ विद्यमान हैं, जहाँ दूरस्थ एवं वनाच्छादित क्षेत्रों में पारंपरिक आजीविका का प्रभुत्व है, वहीं नगरीय केन्द्रों के निकट स्थित क्षेत्रों में सेवा, व्यापार एवं अन्य गैर–कृषि व्यवसायों का विस्तार देखने को मिलता है। अतः जनजातीय समुदायों के सतत् सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए रोजगार के विविध अवसरों का सृजन एवं व्यावसायिक संरचना का संतुलित विकास आवश्यक है।

सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की आर्थिक स्थिति एवं व्यावसायिक संरचना में सुधार हेतु कृषि आधुनिकीकरण, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार तथा उन्नत कृषि तकनीकों के प्रसार पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। जनजातीय युवाओं के लिए कौशल विकास एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित कर उन्हें उद्योग, सेवा एवं स्वरोजगार से जोड़ा जाना आवश्यक है। वनोपज आधारित कुटीर एवं लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देकर स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं। महिला स्व–सहायता समूहों को आर्थिक गतिविधियों से जोड़कर उनकी आय एवं रोजगार क्षमता में वृद्धि की जा सकती है। इसके अतिरिक्त शिक्षा, परिवहन, संचार एवं बाजार सुविधाओं के विकास से जनजातीय समुदायों की गैर– कृषि व्यवसायों तक पहुँच बढ़ेगी तथा व्यावसायिक विविधीकरण को गति मिलेगी। इस प्रकार समन्वित विकास नीतियों के माध्यम से जनजातीय क्षेत्रों में आर्थिक सशक्तिकरण एवं समग्र क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

संदर्भ –

1. मौर्य, एस.डी. (2013) : सामाजिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 69
2. रात्रे, चैतराम (2011) : अनुसूचित जनजातियों का सामाजार्थिक मूल्यांकन एवं भौगोलिक संदर्भ, मानसी पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 81
3. हसनैन, नदीम (2013) : जनजातीय भारत, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, P.179, 180
4. नायडू, पी.आर. (1997) : आदिवासी विकास की समस्याएं, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 133
5. बघेल, डी.एस. एवं बघेल, किरण, भारतीय समाज, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, पृ. 298

6. तिवारी, रामचन्द्र (2005) : अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 33
7. Jahan, Nudrat and Goswami Kaushalendra Prakash (2012) : Forest Resource and Environmental Services in Faizabad District, National Geographical Journal of India, Varanasi, Vol. 58, Pt. 1, PP.55
8. Chandna, R.C. (2016), Population Geography, Kalyani Publication, New Delhi.
9. Singh, J. (2015), Human Geography, Gyanodaya Prakashan, Gorakhpur.